होमा जैविक कृषि कैसे कार्य करती है ?

भूमि, जल, वातावरण एवं भूजल, धातुओं, गैसों एवं विभिन्न विषयुक्त रसायनों से प्रदूषित हो चुके है।

जंगल का बड़ा क्षेत्रफल लगभग जीवन रहित हो चुका है।

भूमि का जीर्णोद्धार होम उपचार द्वारा करना अति आवश्यक है।

जीर्णोद्धारित मृदा में सभी प्रकार के मित्र एवं हानिकारक कीट एवं सूक्ष्म जीव मौजूद रहते हैं।

जिसके फलस्वरूप एक स्वस्थ वातावरण का निर्माण होता है।

इससे एक सूक्ष्म वातावरण प्रणाली का विकास होता है जो पौधों की वृद्धि के लिए उपयुक्त होती है।

लाभदायक सूक्ष्म जीवों की संख्या में वृद्धि से मृदा के स्वास्थ्य में सुधार होता है। जिससें कार्बन, हाइड्रोजन एवं आक्सीजन के बीच संतुलन बनता है।

आधुनिक सिद्धान्त के अनुसार उपरोक्त तीनों तत्वों से नत्रजन स्थिरीकरण करने वाले तथा फास्फोरस घोलक जीवाणुओं की क्रियाशीलता में वृद्धि होती है।

इस तरह के सूक्ष्म वातावरण में केंचुए जैसे लाभदायक जीवों की संख्या में वृद्धि होती है जो मृदा को पचाकर उसकी पोषक क्षमता में वृद्धि करते हैं।

अग्निहोत्र भस्म को मृदा में प्रयोग के पश्चात् घुलनशील फास्फोरस की मात्रा में वृद्धि होती है जिसको पौधों की चूषक जड़ें आसानी से अवशोषित कर लेती हैं।

ठसके अतिरिक्त नत्रजन एवं पोटैशियम का भी अवशोषण होमा वातावरण में संतुलित होता है।

अतः इस सत्य को लोगों तक पहुंचाना चाहिए कि होमा उपचार कैसे कार्य करता है।

जब किसी बगीचे में अग्निहोत्र यज्ञ या अन्य होम किया जाता है तब एक ऐसे वातावरण का निर्माण होता है जिससे पोषक तत्व, लाभदायक कीटों एवं सूक्ष्म जीवों की संख्या में सुधार आता है।

यह प्रकृति का स्व प्रभाव है जिससे मृदा एवं पौधे लाभावन्वित होते हैं एवं पौधों का समुचित विकास होता हैं। ठीक वही अवस्था उत्पन्न होती है जब अग्निहोत्र भस्म उपचारित जल का छिड़काव पौधों पर किया जाता है तब पौधों की वृद्धि, कीट एवं बीमारियों से सुरक्षा होती है और यदि भस्म का पौधों के चारों तरफ या क्यारी में छिड़काव किया जाता है तो लाभदायक पोषक तत्व आकर्षित होते हैं और पौधों की वृद्धि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

ठसके अतिरिक्त अन्य कियायें जैसे निराई, गुड़ाई, खाद का प्रयोग, छिड़काव, अग्निहोत्र भस्म का प्रयोग इत्यादि को करते रहना चाहिए।

परन्तु होम अभ्यास ही इसकी कुंजी है।